तृतीय अध्याय

इतिहास विरुद्ध चित्रण से शिवाजी के चरित्र की हानि

चरित्र हानि के कारण ।

पात्रों के गलत नाम और गलत स्थान ।

काल विपर्यास ।

शौर्य ।

काल्पनिक प्रसंग ।

शिवाजी के कार्य का श्रेय विभाजन ।

दैवी और अद्भुत ढंग से चरित्र-चित्रण ।

धार्मिक क्रूरता ।

प्रेमवीर ।

मूल्यांकन ।

-७५-

तृतीय अध्याय

इतिहास विरुद्ध चित्रण से शिवाजी के चरित्र की हानि ----

चरित्र हानि के कारण

उपन्यास साहित्य में छत्रपति शिवाजी का जो चरित्र-चित्रण हुआ है उसमें कुछ गलतियाँ हो गई हैं । कुछ गलतियाँ सामान्य हैं, क्योंकि उनसे शिवाजी के चरित्र की हानि नहीं होती । इतिहास विरुद्ध काल्पनिक चित्रण करके कुछ उपन्यासकारों ने शिवाजी के चरित्र को प्रभावी बनाने का सफल प्रयास किया है । उपन्यासकार यादवेंद्र जैन का चित्रण इसी प्रकार का है । उन्होंने कल्पना का योग्य स्थानपर प्रयोग करके शिवाजी का चरित्र-चित्रण प्रभावी ढंग से किया है । उपन्यास में कल्पना का निषेध नहीं होता मगर उस कल्पना का प्रयोग योग्य स्थानपर होना चाहिए ।

हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी के चरित्र की जो हानि हो गई है, उसका प्रमुख कारण है इतिहास विरुद्ध चित्रण । इतिहास के गहरे ज्ञान के अभाव में कुछ गलतियाँ हो गई हैं । कुछ उपन्यासकारों ने अपने काल की कुछ समस्याएँ शिवाजी के चरित्र के माध्यम से हल करने का प्रयत्न किया है, मगर यह प्रयत्न श्रेष्ठ ढंग का न होने के कारण शिवाजी के चरित्र की हानि हो गई है । इन गलतियों से किसी न किसी प्रकार शिवाजी के चरित्र की हानि हो गई है । इन गलतियों का विवेचन हम इस अध्याय में करनेवाले हैं । उपन्यास साहित्य में गलतियाँ अधिक मात्रा में हैं । हमारा विवेचन सिर्फ उपन्यास साहित्य परही सीमित ही रहेगा ।

पात्रों के गलत नाम और गलत स्थान --

ऐतिहासिक उपन्यासकार को इतिहास पूरा ज्ञान होता ही है सो बात नहीं । इसी अभाव के कारण उपन्यासकार पात्रों के गलत नाम अपने उपन्यास में देता है । उपन्यासकार एम.के. पाध्ये लिखते हैं .....

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

` ठीक है, शाम को बत्तियाँ जलते ही मैं उमरखान को यहाँ से निकाह के नामपर हटवा दूँगा ।` [१]

यहाँ उमरखान नाम यह गलत है । इसी प्रसंग में उमरखान का उल्लेख इतिहास में नहीं है । इतिहास में उमरखान के स्थानपर पैलादखाँ का उल्लेख मिलता है । इसलिए उमरखान के स्थानपर पैलादखाँ चाहिए ।

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी के कार्य का चित्रण करते समय गलत स्थानों का चित्रण किया है । इसका कारण इतिहास के गहरे ज्ञान का अभाव है । एक जगह परमेश्वर प्रसाद ` सिंह ` लिखते हैं....` १६ जनवरी की सुबह में बुरहानपुर के एक बाग में अपना डेरा डाला । इनायत खाँ ने सन्धि के लिए अपना दूत भी भेजा, किन्तु दूत की कुछ भी सुनवाई नहीं हुई ।` [२]

यहाँ परमेश्वर प्रसाद ने बुरहानपुर स्थान का उल्लेख किया है जो गलत है । वे कहते हैं सूरत लूट के समय शिवाजी ने बुरहान पूर में डेरा डाला था लेकिन यह गलत है । इतिहास में गणदेवी गाँव का उल्लेख है ।

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चित्रण करते समय पात्रों के गलत नाम और प्रसंग के गलत स्थानों का प्रयोग किया है । जो इतिहास सम्मत नहीं है ।

काल विपर्यास ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चित्रण करते समय काल की गलतियाँ की है । कई लेखकों ने आधुनिक काल से शिवाजी का संबंध जोडा है, जिससे शिवाजी के ऐतिहासिक चरित्र की हानि होती है । एक जगह उपन्यासकार यादवचंद्र जैन लिखते हैं .....` बापूजी । हम सत्याग्रह कर देंगे । हम अनशन करेंगे । आपको आदिलशाही की गुलामी का परित्याग करना होगा । आपको दक्षिण छोडना होगा । बंगलोर छोडना होगा । आज की इस संम्पूर्ण परिस्थिति को बदलना होगा ।` [3]

शिवाजी १६ वी शताब्दी में हो गये थे । गांधी जी १९ वी शताब्दी में हो गये । गांधी जी के समय का अनशन और सत्याग्रह से शिवाजी का संबंध जोडना गलत हैं । शिवाजी वीर पुरुष हैं । इतिहास में शिवाजी के शौर्य का वर्णन मिलता हैं । जिसका विश्वास तलवार पर होता हैं, उसके मुँहसे अनशन, सत्याग्रह यह बाते शोभायमान नहीं दिखाई देती । शिवाजी से आधुनिक काल का संबंध जोडना यह काल की गलती हैं ।

परमेश्वर प्रसाद सिंह ने अपने उपन्यास में शिवाजी का संबंध आधुनिक काल से जोडा हैं जो कालविसंगत हैं । वे लिखते हैं..... ` तालियों की गडगडाहट के साथ दादाजी नरस प्रभु का भाष्पण समाप्त हुआ और पुन: एक बार गगनभेदी नारे गूँज उठे ---

` हमारे किशोर नेता की - जय
शिवा भवानी की - जय
बजरंग बली की - जय `

किशोर नेता (शिवाजी) का भाष्पण प्रारम्भ हुआ - देवियों, सज्जनों एवं आर्यावर्त के कर्णधारे ।` [४]

परमेश्वर प्रसाद ने शिवाजी को भाषण करते हुए चित्रित किया हैं । शिवकाल में भाष्पण की प्रथा नहीं थी । भाषाण की पध्दति आधुनिक काल की हैं । शिवाजी का सम्बन्ध आधुनिक काल से जोडना गलत हैं । परमेश्वर प्रसाद ने शिवाजी को वक्ता के रुप में चित्रित किया हैं, जो गलत हैं । शिवाजी वीर पुरुष हैं । शिवाजी को भाषाण करते हुए चित्रित नहीं कर सकते । यह चित्रण इतिहास सम्मत नहीं हैं । काल की कुछ गलतियाँ उपन्यास में हो गई हैं ।

शौर्य वर्णन ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी के शौर्य का वर्णन किया हैं । शिवाजी शूर और वीर थे, इसमें कोई संदेह नहीं । लेकिन उपन्यासकारों ने कल्पना के माध्यम से शिवाजी के शौर्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करने का

प्रयत्न किया है । एक जगह मनहर चौहान लिखते हैं.....

" जिन युध्दों में शिवाजी उपस्थित न होते, वहाँ मराठों की हार निश्चित होती थीं । शाइस्ताखाँ की ताकत के सामने रुक पाना बहुत कठिन था ।" [५]

यहाँ मनहर चौहान कहते हैं, शिवाजी के अभाव में मराठों की हार हो जाती थी । यह गलत है, क्योंकि ऐसे अनेक युध्द हो गये हैं, जो मराठों ने जीत लिये हैं । उदाहरण के लिए सिंहगढ - विजय लढाई में शिवाजी नहीं थे, फिर भी तानाजी मालुसरे ने किला जीत लिया । इससे यह स्पष्ट होता है कि शिवाजी के समान अनेक मराठे शूरवीर थे ।

मनहर चौहान ने शिवाजी का चित्रण करते समय अतिभावुक होकर कल्पना का अति प्रयोग किया है । जिससे शिवाजी के शौर्य का वर्णन बढता नहीं । क्योंकि अन्य मराठों का उल्लेख करते हुए था उनके माध्यमसे किये हुए चित्रण से शिवाजी के शौर्य का महत्व बढता है ।

जागीरदान --

उपन्यासकारों ने शिवाजी का चरित्र चित्रण अनेक गुणों से किया है । उनकी उदारता का परिचय देने के लिए उन्होंने कल्पना का प्रयोग किया है, जो इतिहास विरुध्द ठहरता है । जो गुण शिवाजी में नहीं था, उस गुण के साथ शिवाजी को उपन्यासकारों ने चित्रित किया है, जिससे चरित्र हानि की संभावना रहती है । यादवेन्द्र जैन लिखते हैं.....

" बहुत लोगों को जागीरों के दानपत्र दिये गये । कुछ अपाहिजों या मृतकों के घरवालों को पेंशने घोषित की गयी ।" [६]

लेकिन यह गलत चित्रण है । शिवाजी जागीरदान नहीं देते थे । अन्य राजाओं की परम्परा में जागीरदान की पध्दति थी । लेकिन शिवाजी जागीरदान देते थे, यह इतिहास विरुध्द चित्रण ठहरता है । जैन जी ने लिखा है अफजलखाँ वध के बाद उसमें मृत मराठों के परिवारों को शिवाजी ने

जागीरदान दिया, जो गलत हैं । शिवाजी सिर्फ दरबार में सम्मान करते थे ।

किंवदंतियाँ और काल्पनिक प्रसंग ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण करते समय कुछ काल्पनिक प्रसंगों का आधार लिया हैं ।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने ऐसे काल्पनिक प्रसंगों का वर्णन अपने उपन्यास में किया हैं । वे लिखते हैं .....

` मुमूर्षु ने प्रकाश और मनुष्य मूर्ति को देखा, जल एक संकेत किया । महाराज ने स्वयं उसके मुख में जल डाला । जल पीकर उसने आँखे खोली और क्षीण स्वर में कहा --` आप कौन हैं प्राण रक्षक ?` ७

यहाँ चतुरसेन ने शिवाजी का रास्ते में घायल अवस्था में तानाजी से मिलना वर्णन किया हैं, जो गलत हैं । शिवाजी के पास तानाजी मालुसरे नामक सेनापति था । जिन्होंने सिंहगढ़ जीता, लेकिन तानाजी का घायल अवस्था में मिलना, लेखक की कल्पना हैं । चतुरसेन ने उपन्यास की शुरुवात काल्पनिक प्रसंग से ही कर दी हैं ।

शिवाजी के कार्य का श्रेय विभाजन ---

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी के व्यक्तित्व का चित्रण सुंदर ढंग किया हैं । उनके कार्य का वर्णन करते समय उपन्यासकारों कहीं-कहीं गलत चित्रण किया हैं । शिवाजी के किये हुये कार्य का श्रेय विभाजित करके चित्रित किया हैं, जिससे उस कार्य का महत्व कम हो जाता हैं । ऐसे श्रेय विभाजन की गलतियाँ उपन्यासकारों ने की हैं । यादवचंद्र जैन लिखते हैं .....

` वह जीजाबाई का बेटा था । उसने समर के जोश अपने मराठों से सीखे और उन्हें सिखलाये थे जिनके खून का हौसला समर्थ गुरु रामदास ने गरमाया था ।` ८

शिवाजी को अफजलखाँ के वध के बाद आदिलशाही और मुगलशाही से सामना करना पडा । इन दोनों से शिवाजी ने सामना किया और यश भी पाया । लेकिन इस का श्रेय विभाजन करके यादवचन्द्र जी ने रामदास को दिया जो गलत हैं । समर्थ रामदास वीर,योध्दा नहीं थे । रामदास जनजागृती का कार्य करते थे । इसलिये रामदास को युध्द-विजय का श्रेय देना गलत हैं ।

दैवी और अद्भुत ढंगसे चरित्र-चित्रण --

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी चरित्र प्रभावी बनाने के लिए कुछ दैवी चित्रण अपने उपन्यास में किया हैं । लेकिन दैवी चित्रण से चरित्र प्रभावी नहीं होता । शिवाजी के किये हुये कार्य के पीछे दैवी शक्ति का चित्रण करना शिवाजी का महत्व कम करना ही हैं । शिवाजी के जन्म,यशप्राप्ति के वर्णन में उपन्यासकारों ने दैवी चित्रण किया हैं ।

यादवचंद्र जैन लिखते हैं .....

` मुझे वरदान दे । मुझे एक पुत्र दे । ऐसा पुत्र दे, जो जाति,समाज और देश का गौरव हो । जो तेरा पुत्र हो । जो शिवाभवानी का पुत्र हो ।` इससे यह स्पष्ट हो जाता हैं , कि शिवाजी वरदान से प्राप्त पुत्र था, जो इतिहास सम्मत नहीं हैं ।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने शिवाजी का चरित्र चित्रण करते समय दैवी चित्रण का आधार लिया हैं । वे कहते हैं ....` भवानी के आदेश से मैं आगरा जा रहा हूँ । भवानी का जो आदेश होगा, वह करूँगा । तुम डरते क्यों हो, अन्ताजी । यदि औरंगजेब ने दगा की तो मराठों की तलवारें भी ठण्डी नहीं हो गई हैं । वह आग बरसेगी कि दिल्ली और आगरा जलकर क्षार हो जाएगा ।` [१०]

यहाँ चतुरसेन शास्त्री कहते हैं कि शिवाजी भवानी के आदेश से औरंगजेब को मिलने के लिए आगरा गए थे । इससे शिवाजी के चरित्र की हानि

होती हैं । दैवी चित्रण करने से शिवाजी के वैयक्तिक गुणों का प्रभाव कम होता हैं ।

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चित्रण करते समय कई अद्भुत घटनाओं का आधार लिया हैं, जो योग्य नहीं हैं । उपन्यासकार परमेश्वर प्रसाद ने अद्भुत चित्रण किया हैं । जिससे शिवाजी के चरित्र का प्रभाव कम होता हैं । परमेश्वर प्रसाद सिंह लिखते हैं.....

` कहते हैं, कर्नाटक विजय से लौटने के बाद शिवाभवानी ने पुन: आकाशवाणी प्रस्तुत की --` पुत्र शिवा` तुम्हारी सफलता से मैं काफी प्रसन्न हूँ । जिस उद्देश्य की सम्पूर्ति के लिए तुम्हारा अवतार हुआ था, उस उद्देश्य की पूर्ति हो गयी । अखिल विश्व के मानव समुदाय तुमने देश, धर्म और संस्कृति की जो अनुपम शिक्षा दी हैं, वह अनन्त काल तक अविरल विश्व के जन-मानस को प्रगति की रोशनी प्रदान करती रहेगी । अब तुमसे मुझको इससे भी महान् कार्य करवाना हैं । और उसी समय से छत्रपति शिवाजी अस्वस्थ रहने लगे ।` [११]

परमेश्वर प्रसाद ने शिवाजी का चित्रण करते समय अद्भुत प्रसंग का वर्णन किया हैं,जो इतिहास सम्मत नहीं हैं । इस चित्रण से शिवाजी के कार्य की हानि होती हैं ।

उपन्यासकारों ने शिवाजी का चित्रण करते समय दैवी और अद्भुत प्रसंगोंका वर्णन किया हैं । जिससे शिवाजी के स्वकर्तत्व का महत्व कम हो जाता हैं । यह इतिहास की कसौटीपर खरी नहीं उतरती इसलिए यह घटनाएँ गलत हैं ।

धार्मिक कट्टरता ---

शिवाजी हिंदू धर्म के रक्षक थे । उन्होंने हिंदू धर्म का उध्दार किया हैं, यह बात सत्य हैं । लेकिन उपन्यासकारों ने उनकी धार्मिकता का चित्रण किया हैं, वह योग्य नहीं हैं । आचार्य चतुरसेन ने शिवाजी की धार्मिकता का परिचय देते हुए लिखा हैं.....

` साथ ही माताने उन्हें पुराणों की कहानियाँ और धर्मोपाख्यान सुनाकर उनकी वृत्ति को क्रूर हिंदू बना दिया ।` [१२]

यहाँ चतुरसेन ने शिवाजी को क्रूर हिंदू बना दिया हैं, जो गलत हैं । इससे उनके चरित्र की हानि होती हैं । वे अन्य राजाओं की तरह धर्मान्ध नहीं थे । वे हिंदू धर्म के रक्षक अवश्य थे । शिवाजी के साथ और दरबार में मुसलमान जाति के लोग थे, इससे उनके धार्मिक उदारता का परिचय मिलता हैं । उन्होंने हिंदू धर्म की तरह अन्य धर्मों की भी स्तुति या रक्षा की हैं । उन धर्मों की हानि नहीं की । इसलिए उनपर क्रूर हिंदूपन का आरोप गलत हैं ।

प्रेमवीर --

हिंदी उपन्यासकारों ने शिवाजी का चरित्र-चित्रण अच्छे ढंग से किया हैं । लेकिन कई उपन्यासकारोंने उन्हें अलग ढंग से चित्रण करने का प्रयत्न किया हैं, जो गलत हैं । वह बाते इतिहास सम्मत नहीं हैं इससे उनके चरित्र की हानि होती हैं । उपन्यासकार ने प्रेमवीर के रूपमें चित्रण किया हैं । उपन्यासकार यादवचंद्र जैन लिखते हैं..... ` शिवा ने देखा-उनकी स्थिति इस ओर अत्यंत दयनीय हैं । खेद की आवृति से स्वयं हिले जा रहे थे ऊपर से इतने तीखे वाण ..... विवाह से पूर्व का उनका यह प्रणय इतना कटु हो जाएगा, उन्हें इसकी किंचित संभावना न थी । तभी उन्होंने पश्चाताप रूप में ही नहीं अपितु संकल्परूप में निश्चय किया कि वे सगुने से विवाह करेंगे किन्तु अब सगुने को समझाना कठिन हो रहा था ।` [१३]

` यहाँ उपन्यासकार यादवचंद्र ने शिवाजी को प्रेमवीर के रूपमें चित्रित किया हैं । उन्होंने शिवाजी का सगुने से विवाह से पहले संबंध था । ऐसा कहा तो लेकिन इसके लिए कोई आधार नहीं हैं । कोई भी साहित्यकार को इतिहास विरुद्ध चित्रण करने का अधिकार नहीं हैं । इससे यह सिध्द होता हैं कि यह चित्रण गलत हैं । नीतिमत्ता की दृष्टिसे शिवाजी के चरित्र की हानि होती

हैं । शिवाजी प्रेमवीर नहीं थे, वे रणवीर थे । एक सच्चे रणवीर को प्रेमवीर कहना गलत हैं ।

मूल्यांकन ----

इस अध्याय में हिंदी उपन्यास साहित्य में शिवाजी के चरित्र की हानि किस कारण हो गई हैं । इसकी चर्चा की गयी हैं । चरित्र हानि के कारणों को जब हम ढूँढने का प्रयास करते हैं, तब हमारे सामने यही दो प्रमुख कारण आ जाते हैं । उपन्यासकार को इतिहास का गहरा ज्ञान नहीं था । इस कारण ऐसे उपन्यासकारों के द्वारा शिवाजी के चरित्र की हानि हो गई हैं ।

गहरे ज्ञान के अभाव के कारण उपन्यासकारों ने शूर-वीर शिवाजी को प्रेमवीर के रूपमें चित्रित किया हैं । साथ ही साथ शिवाजी का चित्रण दैवी और काल्पनिक घटनाओं द्वारा भी करने का प्रयास किया हैं । इसी कारण शिवाजी के चरित्र की हानि हो गई हैं ।

संदर्भ

१ एम.के.पाध्ये - रिहाई - पृ.७०,रायपुर

२ परमेश्वर प्रसाद सिंह - छत्रपति शिवाजी - पृ.१०७,दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७० ई.

३ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी - पृ.१३७,दिल्ली,प्र.सं.१९५९ ई.

४ परमेश्वर प्रसाद सिंह - छत्रपति शिवाजी, पृ.४५,दिल्ली,प्र.सं.१९७० ई.

५ मनहर चौहान - जयभवानी, पृ.५९,दिल्ली,सं.१९७१ ई.

६ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी, पृ.२११,दिल्ली,प्र.सं.१९५९ ई.

७ आचार्य चतुरसेन शास्त्री - सह्याद्रि की चट्टाने, पृ.६,दिल्ली, दूसरा संस्करण - अगस्त,१९६७ ई.

८ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी, पृ.२१४,दिल्ली, प्र.सं.१९५९ ई.

९ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी, पृ.१०, दिल्ली,प्र.सं.१९५९ ई.

१० आ.चतुरसेन शास्त्री- सह्याद्रि की चट्टाने, पृ.१०१,दिल्ली,दूसरा सं., अगस्त,१९६७ ई.

११ परमेश्वर प्रसाद सिंह - छत्रपति शिवाजी, पृ.१४१,दिल्ली, प्रथम संस्करण १९७० ई.

१२ आ.चतुरसेन शास्त्री - सह्याद्रि की चट्टाने, पृ.१६,दिल्ली,दूसरा संस्करण अगस्त १९६७ ई.

१३ यादवचंद्र जैन - शिवनेर केसरी, पृ.१६८,दिल्ली, प्र.सं.१९५९ ई.